महर्षि विश्वामित्र की शिवभक्ति

महामुनि विश्वामित्र भारतीय पौराणिक साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। उनके गौरव की गाथा से इतिहास भरा पड़ा है। उन्होंने ही भगवान् राम एवं लक्ष्मण को दिव्य अस्त्र-शस्त्रों तथा बला-अतिबला विद्या (जिससे व्यक्ति भूख-प्यास तथा निद्रा पर विजय प्राप्त कर लेता है) का ज्ञान प्रदान किया था। विश्वामित्र मुनि वे ही हैं, जिन्होंने अपने शौच-स्नान की सुविधा के लिये अगाध जल से भरी हुई उस दुर्गम नदी का निर्माण किया जिसे लोक में कौशिकी नदी के नाम से जाना जाता है। उन्होंने कुपित होकर दूसरे लोकों की सृष्टि की तथा नक्षत्र-सम्पत्ति से रूठकर प्रतिश्रवण आदि नूतन नक्षत्रों का निर्माण किया था। उन्होंने गुरु वसिष्ठ के शाप से हीनावस्था में पड़े हुए राजा त्रिशंकु को भी शरण दी थी। यह सोचकर कि "विश्वामित्र वसिष्ठ के शाप को कैसे छुड़ा देंगे?" देवताओं ने उनकी अवहेलना करके त्रिशंकु के यज्ञ की सारी सामग्री नष्ट कर दी। परन्तु विश्वामित्र ने दूसरी यज्ञ सामग्रियों की सृष्टि कर ली तथा उन्होंने त्रिशंकु को स्वर्गलोक में पहुँचा दिया। वे ही ऐसे पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने क्षत्रिय कुल में उत्पन्न होकर भी तपस्या के बल से ब्राह्मणत्व को प्राप्त किया।

इस ऋषि की प्रमुख उपलब्धियों का श्रेय शिवआराधना को जाता है। विश्वामित्र एक महान् शिवभक्त थे जिन्होंने भगवान् शिव को प्रसन्न कर अनेक वर पाया था। विश्वामित्र के ब्रह्मर्षि बनने से बहुत पहले की बात है जब वे राजा थे, उस समय एक बार वे वसिष्ठजी के आश्रम में गये। वहाँ पर सभी इच्छाओं को पूरी करनेवाली कामधेनु गाय को उन्होंने देखा तथा उसे माँगने पर न मिलने पर बलपूर्वक ले जाना चाहा। तब वसिष्ठ की आज्ञा से कामधेनु ने अनेक प्रकार के वीरों की सृष्टि कर विश्वामित्र की सेना को पराजित कर दिया। अपनी समस्त सेना तथा एक पुत्र को छोड़ सभी पुत्रों के विनाश को देखकर वे बहुत खिन्न हुए। तब अपने एकमात्र पुत्र को राज्य देकर स्वयं हिमालय के पार्श्वभाग में जाकर महादेवजी की प्रसन्नता के लिये महान् तप में लीन हो गये। समय आने पर भगवान् शिव ने उन्हें दर्शन देकर वर माँगने के लिये प्रेरित किया।

तब महादेवजी से उन्होंने कहा कि- "यदि आप संतुष्ट हों तो अंग, उपांग, उपनिषद् और रहस्योंसहित धनुर्वेद मुझे प्रदान कीजिये। देवताओं, दानवों, महर्षियों, गन्धर्वों, यक्षों तथा राक्षसों के पास जो-जो अस्त्र हों, वे सब आपकी कृपा से मेरे हृदय में प्रकट हो जायँ।"

यदि तुष्टो महादेव धनुर्वेदो ममानघ।
साङ्गोपाङ्गोपनिषदः सरहस्यः प्रदीयताम्।।
यानि देवेषु चास्त्राणि दानवेषु महर्षिषु।
गन्धर्वयक्षरक्षःसु प्रतिभान्तु ममानघ।।
तव प्रसादाद् भवतु देवदेव ममेप्सितम्।

(बाल्मीकीय रामायण, बालकाण्ड, सर्ग 55 श्लोक 16-18)

विश्वामित्र द्वारा इस प्रकार की याचना करने पर भगवान् शिव 'एवमस्तु' कहकर वहाँ से चले गये। शिव द्वारा प्रदत्त उस वरदान के कारण ही विश्वामित्र सभी प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों के ज्ञाता हो गये थे।

पूर्वकाल में त्रिशंकु नामक सूर्यवंशी राजा ने अपने कुलगुरु वसिष्ठ से यह याचना की कि वे एक ऐसा यज्ञ करायें जिससे वह सदेह स्वर्ग में जा सके। उत्तर में वसिष्ठजी ने कहा कि ऐसा संभव नहीं है। तब उन्होंने वसिष्ठजी के पुत्रों के पास जाकर अपनी उसी बात को दोहराया। इस बात को सुनकर गुरुपुत्रों ने भी उसे असंभव बताया। तदनन्तर त्रिशंकु ने कहा कि अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो आप लोगों को छोड़कर मैं किसी दूसरे पुरोहित का वरण करूँगा। यह सुनकर सभी गुरुपुत्रों ने कुपित होकर उन्हें चाण्डाल बन जाने का श्राप दे दिया और वे तत्क्षण चाण्डाल हो गये।

शाप प्राप्त होने पर वे अपने पुत्र हरिश्चन्द्र को राज्य देकर अपने स्वर्ग जाने के संकल्प पर विचार करने लगे। त्रिशंकु ने यह निश्चय किया कि इस समय त्रिलोकी में विश्वामित्र को छोड़कर मुझे कोई भी बचानेवाला नहीं है। ऐसा विचार कर उन्होंने कुरुक्षेत्र में स्थित विश्वामित्र के आश्रम में जाकर उन्हें साष्टांग प्रणाम कर निवेदन किया कि "मैं शाप से छूटने के लिये आपकी शरण में आया हूँ।" त्रिशंकु ने अपनी सारी कहानी विश्वामित्र को बता दी।

त्रिशंकु की बात सुनकर विश्वामित्र ने कहा-राजन्! मैं तुमसे वैसा यज्ञ कराऊँगा, जिससे तुम स्वर्गलोक में चले जाओगे। आओ, मेरे साथ तीर्थयात्रा के लिये चलो, जिससे तुम चाण्डालता से मुक्त होकर यज्ञ करने के योग्य हो जाओ। यों कहकर दोनों ने नाना प्रकार के तीर्थों की यात्रा करके अर्बुदाचल(आबू) पर अचलेश्वर का दर्शन किया। वहीं पर मार्कण्डेयजी से भेंट हुई। तब मार्कण्डेयजी ने पूछा कि आप लोग कहाँ से आ रहे हैं? उत्तर में विश्वामित्र ने सारी कथा और अपनी तीर्थयात्रा का प्रयोजन भी बताया। अन्त में कहा कि अभीतक त्रिशंकु चाण्डालत्व से मुक्त नहीं हो सके। मार्कण्डेयजी ने कहा कि यदि ऐसी बात है तो आनर्त देश के भीतर एक स्थान है, जहाँ श्रेष्ठ देवताओं ने पहले स्वर्णमय शिवलिंग की स्थापना की थी। पाताल में जो हाटकेश्वर लिंग प्रसिद्ध है उसी के नाम पर इस शिवलिंग को भी लोक में हाटकेश्वर कहते हैं। वहीं पाताल-गंगा का जल है। उस गंगा में ये त्रिशंकु स्नान तथा हाटकेश्वर का दर्शन करके चाण्डालत्व से मुक्त एवं शुद्ध हो जायँगे।

मार्कण्डेयजी की सलाह के अनुसार पातालगंगा में स्नान के पश्चात् हाटकेश्वर का दर्शन करके त्रिशंकु चाण्डालत्व से मुक्त होकर सूर्य के समान तेजस्वी हो गये। इसके उपरान्त विश्वामित्र ने त्रिशंकु से कहा कि- "तुम्हारे लिये मैं स्वयं ब्रह्माजी के पास जाकर प्रार्थना करूँगा कि वे तुम्हारे यज्ञ में यज्ञभाग ग्रहण करें। अत: जबतक मैं ब्रह्मलोक से आता हूँ तबतक तुम यज्ञ के सब सामान यहीं मँगाओ। तब उन्होंने ब्रह्माजी के पास जाकर उन्हें शिव एवं विष्णु आदि सभी देवताओंसहित त्रिशंकु के यज्ञ में आकर यज्ञभाग को ग्रहण करने का निवेदन किया। इसपर ब्रह्माजी ने कहा कि त्रिशंकु सदेह

स्वर्ग नहीं जा सकते। शरीरत्याग के बाद ही ऐसा संभव है।

ब्रह्माजी की बात सुनकर विश्वामित्र ने वापस लौट कर वेदों के पारंगत ब्राह्मणों को बुलाकर राजा को यज्ञ की दीक्षा दी। इस यज्ञ को करते हुए राजा के बारह वर्ष व्यतीत हो गये, किन्तु उन्हें अभीष्ट फल की प्राप्ति नहीं हुई। तत्पश्चात् उन्होंने यज्ञान्त-स्नान किया तथा ऋत्विजों को यथायोग्य दक्षिणाएँ देकर तृप्त किया। ब्राह्मणों को विदा करने के बाद वे विश्वामित्रजी से बोले- "आपके प्रसाद से मेरी चाण्डालता तो नष्ट हो गयी, परन्तु इसी शरीर से स्वर्गलोक नहीं मिला। मुने! अब वसिष्ठ के पुत्र यह सब सुनकर मेरा उपहास करेंगे।" त्रिशंकु की बात सुनकर विश्वामित्र ने उन्हें आश्वासन दिया कि मैं उन्हें इसी शरीर से स्वर्गलोक में भेजूँगा।

इतना कहकर विश्वामित्र ने भगवान् शंकर का दर्शन किया तथा उनकी स्तुति पूजा कर उन्हें सन्तुष्ट किया। सन्तुष्ट होने पर भगवान् शिव ने उन्हें वर माँगने के लिये कहा। तब विश्वामित्र ने कहा-महेश्वर! आपकी कृपा से मुझमें संसार की सृष्टि करने की सामर्थ्य हो जाय। भगवान् शिव उन्हें 'एवमस्तु' कहकर अन्तर्धान हो गये।

वरदान पाकर विश्वामित्र चार प्रकार की सृष्टि रचने लगे। उन्होंने समस्त देवगण, नक्षत्र, ग्रह, मनुष्य, नाग, राक्षस, वृक्षयुक्त लता, सप्तर्षि और ध्रुव आदि सबकी रचना की तथा उन सबको अपने-अपने कर्त्तव्य-कर्मों में नियुक्त किया। इस प्रकार संसार में सूर्य, चन्द्रमा आदि सभी कुछ दुगुने हो गये। यह देखकर इन्द्र ने सब देवताओं के साथ ब्रह्माजी के पास जाकर यह निवेदन किया कि वे विश्वामित्र को सृष्टिकार्य से रोकें अन्यथा उनकी सृष्टि से ही सम्पूर्ण जगत् व्याप्त हो जायगा और वे नये स्वर्ग की रचना कर त्रिंशकु को उसका अधिपति बना देंगे।

तब ब्रह्माजी मुनिश्वर विश्वामित्र के पास गये और उनसे सृष्टिकार्य बन्द करने का आदेश दिया। उत्तर में विश्वामित्र बोले कि यदि त्रिशंकु इसी प्रकार शरीर से आपके लोक में चले जायँ तो मैं नयी सृष्टि नहीं करूँगा। ब्रह्माजी ने विश्वामित्र की बात मान ली और कहा कि त्रिशंकु इसी शरीर से मेरे साथ स्वर्गलोक चलें। ऐसा कहकर ब्रह्माजी त्रिशंकु को साथ लेकर चले गये।

विश्वामित्र की उपर्युक्त कथा से स्पष्ट होता है कि शिवपूजा से ही उन्हें सभी प्रकार के अस्त्रशस्त्रों की प्राप्ति हुई(जिससे वे ब्रह्माण्ड के सर्वश्रेष्ठ धनुर्वेद के ज्ञाता बने)। उन्होंने त्रिशंकु को चाण्डालत्व से मुक्ति दिलायी तथा सृष्टिरचना की सामर्थ्य पायी(जिसके प्रभाव से त्रिशंकु को सदेह स्वर्ग भेज सके)। अतः निष्कर्ष यह निकलता है कि विश्वामित्र की सफलता का राज उनकी शिव-पूजा या शिवभक्ति ही है।

(यह कथा गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित सटीक महाभारत, आदिपर्व के अन्तर्गत सभापर्व के 71 वें अध्याय, बाल्मीकीय रामायण, बालकाण्ड के 55 वें सर्ग तथा संक्षिप्त स्कन्दपुराणांक, नागरखण्ड के कुछ अध्यायों पर आधारित है।)

❀❀❀❀❀❀